RAJYA SABHA

Tuesday, the 15th September, 1964/ the 24th Bhadra, 1886 (Saka)

The House met at eleven of the clock, MR. CHAIRMAN in the Chair.

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

खानों में सुरक्षा सम्बन्धी राष्ट्रीय परिषद्

*१७९. श्री भगवत नारायण भार्गव : क्या श्रम तथा सेवानियोजन मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि जुलाई, 1964 में खानों में सुरक्षा सम्बन्धी जो राष्ट्रीय परिषद् स्थापित की गई थी उसने अब तक क्या क्या मुख्य कार्य किये हैं ?

†[NATIONAL COUNCIL FOR SAFETY IN MINES

*179. SHRI B. N. BHARGAVA: Will the Minister of LABOUR AND EMPLOYMENT be pleased to state the main jobs so far executed by the National Council for Safety in Mines which was set up in July, 1963?]

श्रम तथा सेवानियोजन मंत्रालय में उपमंत्री (श्री रतनलाल किशोरीलाल मालवीय) : परिषद् के कार्यों पर एक टिप्पणी सदन की मेज पर प्रस्तुत है ।

राष्ट्रीय खान सुरक्षा परिषद् के कार्यों पर टिप्पणी

१. पिट-सुरक्षा समिति का निर्माण.—परिषद् ने अपने निर्माण काल से खानों में काम करने वाले कामगरों में काम करने के सुरक्षा उपायों और उन द्वारा अपनाये जाने वाले सुरक्षा उपायों के बारे में चेतना पैदा करने के लिए खानों में पिट सुरक्षा समितियों को गठित, पुनर्गठित और पुनरुज्जीवित करने के लिए आवश्यक कदम उठाये हैं और उठा रही है । 31 जनवरी, 1964 तक 95 कोयला खानों और 59 गैर-कोयला खानों में सुरक्षा परिषद् का निर्माण हो चुका था ।

२. सुरक्षा सप्ताह.—राष्ट्रीय खान सुरक्षा परिषद के निर्देशन तथा पर्यवेक्षण में (1) रामगढ़-गिरीडीह-बोकारो-करनपुरा खान क्षेत्रों, (2) चांदा-कामती कोयला क्षेत्रों, (3) सिंगरेनी कोयला क्षेत्रों, (4) पेंच वैली कोयला क्षेत्रों, (5) नैलौर अभ्रक खान क्षेत्रों, (6) अजमेर अभ्रक खान क्षेत्रों, (7) कोरबा-कोरिया-जोहिला- बुरहार कोयला क्षेत्रों, (8) झरिया और रानीगंज कोयला क्षेत्रों, (6) कोदरमा अभ्रक खान क्षेत्रों और (10) तालचर कोयला क्षेत्रों में क्रमश: 14 अक्तूबर से 20 अक्तूबर, 1963; 4 नवम्बर से 10 नवम्बर, 1963 ; 18 नवम्बर से 24 नवम्बर, 1963 ; 2 दिसम्बर से 8 दिसम्बर, 1963 ; 23 दिसम्बर से 29 दिसम्बर, 1963 ; 27 जनवरी से 2 फरवरी, 1964 ; 16 फरवरी से 23 फरवरी, 1964; 16 मार्च से 22 मार्च, 1964, 30 मार्च से 5 अप्रैल, 1964 और 13 अप्रैल से 19 अप्रैल, 1964 तक सुरक्षा सप्ताह मनाए गए । 1964 वर्ष के दौरान देश के विभिन्न कोयला क्षेत्रों में सुरक्षा सप्ताह मनाने के और कार्यक्रम तैयार कर लिये गये हैं ।

३. खान कर्मचारियों के लिए नवीकर कक्षाएं और उन द्वारा अन्य खानों का भ्रमण करने के लिये व्यवस्था.—स्थान सम्वातन अधिकारियों के काम में सहायता देने तथा खानों में सम्वातन नियंत्रण के महत्व को जानने के लिए उनकी सहायता करने के लिए राष्ट्रीय खान सुरक्षा परिषद् ने 3 अगस्त से 8 अगस्त, 1964 तक खान सम्वातन अधिकारियों के नवीकर प्रशिक्षण के लिए एक सैमिनार का आयोजन किया । खान सुरक्षा अधिकारियों के नवीकर प्रशिक्षण के लिए इसी प्रकार के एक और सैमिनार का आयोजन भी 24 अगस्त से 29 अगस्त, 1964 तक किया गया है ।

†[ ]English translation.

४. **सुरक्षा पोस्टर, लघु पत्रिकाएं आदि**—सुरक्षा सप्ताह समारोहों के दौरान भाग लेने वाली और भाग न लेने वाली खानों के बीच वितरण के लिए परिषद् द्वारा आठ प्रकार के 29,000 सुरक्षा पोस्टर छापे गये थे।

खानों में सुरक्षा नारों सम्बन्धी 9,136 बिल्ल, सुरक्षा विषयों पर संदेश सम्बन्धी 10,000 पर्चे, सुरक्षा सप्ताहों के दौरान ली जाने वाली "शपथ" की 2,000 प्रतियां और कोयला खानों में गम्भीर चोटों की मासिक दुर्घटनाओं सम्बन्धी लेखा चित्र की 400 प्रतियां बांटी गईं।

निम्नलिखित सुरक्षा लघु पत्रिकाएं, जो परिषद् द्वारा तैयार की गई हैं, बांटी जा रही हैं :–

1. सरदारों/मिटों के लिए निर्देशन टिप्पणी।
2. खानों में काम करने वाले व्यक्तियों के लिए सलाह।
3. शॉट फाइररों के लिए सामान्य निर्देशन।

इन लघु पत्रिकाओं का विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में रूपांतर प्राप्त करने के लिए कार्रवाई की जा रही है।

५. **सुरक्षा फिल्में आदि**.—सुरक्षा फिल्में, फिल्म पट्टियां, स्लाइड्स आदि बनाने के लिए परिषद् ने एक योजना तैयार कर ली है। इस सम्बन्ध में कुछ फुटमान तैयार किया गया है लेकिन सुरक्षा सप्ताह समारोहों के दौरान प्रचार कार्य की सहायता के लिए मुख्य खान निरीक्षक के कार्यालय की सुरक्षा फिल्मों को खानों में बांटा गया। परिषद् ने सुरक्षा गान रिकार्ड करने की व्यवस्था भी की है और आशा है कि इस प्रकार के दो रिकार्ड खानों को बिक्री अथवा वितरण के लिए शीघ्र ही जारी किये जायेंगे।

६. **सुरक्षा बुलेटिन**.—राष्ट्रीय परिषद् ने खानों में सुरक्षा के लिए मुख्य खान निरीक्षक द्वारा तैयार की गई "खानों में सुरक्षा" सम्बन्धी टिप्पणी को पुस्तिका के रूप में प्रकाशित और जारी किया है। इसमें एक सामान्य रूप रेखा दी गई है जिससे यह पता चलता है कि खान में कितनी तेजी से परिस्थितियां बदल सकती हैं और बदलती हैं और किस प्रकार प्राकृतिक और मानवीय तत्व खानों में सुरक्षा की समस्या पर प्रभाव डालते हैं।

परिषद् सामयिक सुरक्षा बुलेटिन जारी करने के लिए भी आवश्यक कदम उठा रही है।

७. **सुरक्षा पोस्टर और सुरक्षा नारा प्रतियोगिता आदि**.—खान सुरक्षा पोस्टर वार्षिक प्रतियोगिता करने के लिए एक योजना तैयार की जा रही है। सुरक्षा सप्ताहों में (क) सर्वोत्तम सुरक्षा पोस्टर और (ख) सर्वोत्तम सुरक्षा नारे के लिए इनाम दिये गये।

८. **प्राथमिक उपचार प्रतियोगिता**.—परिषद् ने झरिया–रानीगंज कोयला खानों में प्राथमिक उपचार प्रतियोगितायें करने के लिए एक योजना तैयार की है। इन प्रतियोगिताओं की नवम्बर, 1964 में होने की आशा है।

९. **सुरक्षा पंचाट**.—सुरक्षा सप्ताह समारोहों के दौरान खानों के पर्यवेक्षण अधिकारियों तथा व्यक्तिगत कामगरों को खानों में सुरक्षा के सुधार में सहायता करने और खनिकों में सुरक्षा सम्बन्धी चेतना जागृत करने के लिए सुरक्षा पंचाट–वस्तुओं के रूप में और नकद मंजूर किए गए।

१०. **सुरक्षा बोनस की अदायगी**.—सुरक्षा आन्दोलन को बढ़ाने और खान कर्मचारियों में सुरक्षा चेतना की तीव्रतम भावना जागृत करने के लिए (i) मैसर्स एन्ड्र यूल एन्ड कम्पनी लि०, (ii) मैसर्स मैक नील एन्ड बेरी लि०, (iii) मैसर्स लोदना कोलियरी कम्पनी (1920) लि०, (iv) मैसर्स टाटा आयरन एन्ड स्टील

कम्पनी लि०, (v) मैसर्स ईस्ट इंडिया कोल कम्पनी लि०, (vi) मैसर्स बर्ड एन्ड कम्पनी लि०, (vii) मैसर्स शाह वैलेस एन्ड कम्पनी लि० आदि सात बड़ी बड़ी कम्पनियों के मुख्य खान इंजीनियरों से अपनी खानों में "सुरक्षा खान योजना" चालू करने के लिए प्रार्थना की गई थी। मैसर्स टाटा आईरन एन्ड स्टील कम्पनी लि०, मैसर्स लोदना कालियरी कम्पनी (1920) लि० से उत्तर प्राप्त हो चुके हैं। इन्होंने अपने खान कर्मचारियों को नकद इनाम, योग्यता प्रमाण-पत्र और वेतन वृद्धि के रूप में प्रोत्साहन देने के लिए योजना चालू कर दी है।

११. **सामान्य टिप्पणी.**—इस योजना के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए परिषद् को मुख्य खान-निरीक्षक और उसके अधिकारियों, विभिन्न क्षेत्रों के खान प्रबन्धों और पर्यवेक्षण अधिकारियों, खानों के कामगरों और विभिन्न मजदूर संघों के प्रतिनिधियों का पूरा-पूरा सहयोग प्राप्त हो रहा है।

†[THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF LABOUR AND EMPLOYMENT (SHRI RATANLAL KISHORILAL MALVIYA): A note on the activities of the Council is laid on the Table of the House.

NOTE ON THE ACTIVITIES OF THE NATIONAL COUNCIL FOR SAFETY IN MINES

1. *Formation of Pit-Safety Committee.*— Since its formation the Council has taken and is taking necessary steps for the constitution, re-constitution, and revival of Pit-safety committees in mines to create a consciousness among the mine-workers about the safe methods of working and safety measures to be adopted by them. Pit-safety committees were formed in 95 coal mines and E>9 non-coal mines upto 31st. January 1964.

2. *Safety Weeks.*—Safety weeks under the guidanc and supervision of the National Council for Safety in Mines, were observed at (1) Ramgarh-Giridih-Bokaro-Karampura Coalfields, (2) Chandra-Kamtee Coalfields, (3) Singareni Coalfields, (4) Pench valley Coalfields (5) Nellore Mica Mining Areas, (6) Ajmer Mica Mining Areas, (7) Korba-Korea-Johilla-Burhar Coalfields, (8) Jharia and Raniganj Coalfields, (9) Kodarma Mica Mining Area, (10) Talcher Coal-fields on the 14th October to 20th October, 1963; 4th November to 10th November 1963; 18th November to 24th November, 1963; 2nd to 8th December, 1963; 23rd December to 29th December 1963; 27th January to 2nd February 1964; 16th February to 23rd February; 1964; 16th March to 22nd March, 1964; 30th March to 5th April, 1964;' and 13th April to 19th April, 1964. Further programmes for celebration of Safety weeks in various mining areas in the country during the year 1964 have been already drawn up.

3. Refresher classes *for mine officials and arrangements for their visits to other mines.*—With a view to assist the mine ventilation officers, in the performance of their duties and also to help them in better appreciating the importance of ventilation control in mines, the National Council for Safety in Mines arranged a seminar for Refresher training of the Mine ventilation officers from 3rd August to 8th August, 1964. A similar seminar ifor Refresher training for Mine Safety Officers has also been organised from 24th August to 29th August 1964.

4. *Safety Posters, tracts etc.*—Twenty-nine thousand safety posters of eight different types were printed by the Council for distributiom amongst participating and non-participating mines during the safety week celebrations.

9136 Badges containing safety slogans, 10,000 Hand-bills containing messages on safety matters, 2,000 copies of "Pledge" to be taken during safety weeks and 400 copies of a

†[ ] English translation.

graph depicting monthly incidence of \ serious injuries in coal mines were distributed in the Mines.

The following safety tracts prepared and printed by the Council are being distributed.

1. Notes for the guidance of Sirdars/Mates.

2. Advice to persons working in mines,

3. General guidance to shot-flrers. Steps are also being taken to get these tracts translated m different Regional languages.

5. *Safety films etc.*—The Council has already drawn up a scheme for preparation of safety Alms, film strips, slides etc. Certain footage has been already exposed for the purpose. However, during safety weeks celebrations, safety films belonging to the office of the Chief Inspector of Mines were distributed amongst the mines to assist Publicity and propaganda work. The Council has also arranged for the recording of safety songs and it is expected that two such records will be produced shortly for distribution or sale to mines.

6. *Safety* Bulletin.—A note on "Safety in Mines" prepared by the Chief Inspector of Mines has been printed and issued by the National Council for safety in Mines in Booklet form. This gives a general idea of how fast the conditions in a mine can and do change and that factors physical as well as human, affect the problem of safety in Mines.

The Council is also taking necessary steps for the issue of periodical safety Bulletins.

7. *Safety Poster and safety slogan competition etc.*—A scheme is being drawn up to hold an Annual Mines Safety poster competition. During Safety Weeks, prizes were awarded for (a) the best safety poster and (b) the best safety slogan.

8. *First-Aid Competition.*—The Council has already drawn up a scheme for holding First-Ad Competitions in Jharia-Raniganj Coal-fields. These competitions are expected to be held by November 1964.

9. *Safety Awards.*—During the Safety weeks celebrations safety awards in kind and in cash were granted to mine supervisory officials and individual workers for helping to improve safety in mines and safety consciousness among miners.

10. *Payment of Safety Bonus.*—In order to further the safety drive and instil into the mining staff a stronger sense of safety consciousness, the Chief Mining Engineers of seven big companies *viz.* (i) M/s. Andrew Yule & Co. Ltd., (ii) M/s. Me Neli & Barry Ltd., (iii) M|s. Lodna Colliery Co. (1920) Ltd., (iv) M|s Tata Iron & Steel Co. Ltd., (v) M/s. East India Coal Co., Ltd. (vi) M|s. Bird & Co.. Ltd., (vii) M/s. Shaw Wallace & Co., Ltd. were requested to introduce a "Safety Bonus Scheme" at their mines Replies have since been received from the CMEs of M/s. Tata Iron & Steel Co., Ltd., M|s. Cc. Neil & Berry Ltd., and M|s. Lodna Colliery Co. (1920) Ltd., who have introduced the scheme for giving incentive in the form of cash prizes, certificates of merits and increments to their mining staff.

11. *General remarks.*—The Council is getting whole-hearted support from the Chief Inspector of Mines and his officers, mine-managements and supervisory officials, mine-workers and various Labour Union representatives of different zones to fulfil its objects.

श्री भगवत नारायण भार्गव : क्या माननीय मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि कौंसिल ने कोई नये साइंटिफिक मेथड्स भी निकाले हैं जिनके द्वारा खानों में सुरक्षा सम्पादित हो सके ?

श्री रतनलाल किशोरीलाल मालवीय : जो नये नये अविष्कार होते जा रहे हैं उनको खदानों में इंट्रोड्यूस करने की कोशिश की जाती है ।

श्री भगवत नारायण भार्गव : वही तो मैंने पूछा है कि क्या क्या ऐसे नये साइंटिफिक मेथड्स उन्होंने निकाले हैं या कहां निकले हैं ?

श्री रतनलाल किशोरीलाल मालवीय : माइनिंग में नई-नई मशीनें इस्तेमाल की जाती हैं, नई मशीनों से जो खतरे हो सकते हैं उन से बचाने की कोशिश की जाती है और खदानों के अन्दर जो मजदूर काम करते हैं—लोडर हैं, ड्रिलर हैं, माइनर्स हैं, उनको यह सिखाया जाता है कि अपनी रक्षा किस तरह से करें, खदान अगर गिरे या अगर कोई दूसरी स्थिति पैदा हो जाय तो किस तरह से काम करना चाहिये जिससे कि वे खतरे से बाहर रह सकें।

श्री भगवत नारायण भार्गव : इस में कहा गया है कि सुरक्षा आन्दोलन को बढ़ाने और खान कर्मचारियों में सुरक्षा चेतना की तीव्रतम भावना जागृत करने के लिये सात बड़ी बड़ी कम्पनियों के मुख्य खान इंजीनियरों से अपनी खानों में "सुरक्षा खान योजना" चालू करने के लिये प्रार्थना की गई थी। और इससे यह भी मालूम होता है कि इन सात कम्पनियों में केवल दो कम्पनियों ने इस काम के लिये अपनी स्वीकृति दी है। तो मैं यह जानना चाहता हूं कि दूसरी कम्पनियों के सम्बन्ध में सरकार क्या कार्यवाही कर रही है ?

श्री रतनलाल किशोरीलाल मालवीय : कोशिश जारी है। सात कम्पनियों से तो शुरू किया जायगा, फिर तो ८०० खदानें हैं और कोशिश की जायगी कि सब में यह सुरक्षा की योजना लागू हो सके।

श्री राम सहाय : धनबाद में जो झरिया की खान है वहां पर आग लगी हुई है और उसके पास में दूसरी खानें हैं, तो उनकी सुरक्षा के लिये किस प्रकार से प्रबन्ध किया गया है ?

श्री रतनलाल किशोरीलाल मालवीय : जिन खदानों में आग लगी होती है उनके आसपास जो और खदानें होती हैं उनका तो प्रोटेक्शन होता ही है और आग को खदानों तक आने नहीं दिया जाता। ऐसा भी होता है कि खदान के एक हिस्से में आग लगी हुई होती है और दूसरे हिस्से में काम होता रहता है और उसके लिये बैरियर्स बना दिये जाते हैं जिस से आग को दूसरी तरफ नहीं आने दिया जाता।

SHRI D. THENGARI: How many employers were proceeded against for violation of the Safety Rules during the year 1963?

SHRI RATANLAL KISHORILAL MALVIYA: I want notice.

श्री विमलकुमार मन्नालालजी चौरड़िया : क्या श्रीमान यह बतायेंगे कि इन सब मेजर्स को लेने के बावजूद भी दुर्घटनाएं बढ़ती जा रही हैं तो इसके लिये कोई और इफेक्टिव कदम उठाया जा सके इस के बारे में कोई विचार चल रहा है ?

श्री रतनलाल किशोरीलाल मालवीय : मैं माननीय सदस्य को यह बताना चाहूंगा कि ये दुर्घटनाएं पिछले सालों के मुकाबिले में कम होती चली जा रही हैं, यद्यपि कोयले का प्रोडक्शन ज्यादा बढ़ता चला जा रहा है तो भी दुर्घटनायें कम होती चली जा रही हैं। तीन साल से जब से यह सेफ्टी-वीक शुरू हुआ है तब से इसका असर और भी हुआ है। जो दुर्घटनायें कम होती चली जा रही हैं उसका एक सबब यह भी है। वैसे खदान उद्योग में दुर्घटनाओं को रोकना मुश्किल ह। दुनिया में कोई ऐसा देश नहीं है जहां खदानों में दुर्घटनायें न होती हों, मगर मुझे यह कहते हुए प्रसन्नता होती है कि हिन्दुस्तान में बड़े बड़े देशों के मुकाबिले में, अमेरिका या और दूसरे देशों के मुकाबिले में भी कम दुर्घटनायें होती हैं।

SHRI SITARAM JAIPURIA: May I know, Sir, if it is a fact that the various decisions and recommendations made by the National Council for Safety in Mines had been found unsuitable by them and they had to revise their decisions later on, and if this had the effect of increasing the cost of production of coal?

SHRI RATANLAL KISHORILAL MALVIYA: No, this does not have any effect on the cost of coal, because this scheme is being financed by the Coal Mines Welfare Fund and the Mica Mines Welfare Fund.

SHRI SITARAM JAIPURIA; This does not answer my question.

SHRI D. THENGARI: What is the amount of compensation paid to workers on this score during the year 1963? >a

SHRI RATANLAL KISHORILAL MALVIYA; Notice is required.

SHRI D. SANJIVAYYA: That is a separate question; if it is a question of accidents and the number of people involved, and the compensation paid, it is a different question. Today we are considering the question relating to the activities of the Safety Council. It is not a Governmental body; it is a registered body; of course Government is actively helping them.

INDIA'S SUPPORT TO BOLIVIA FOR AN OUTLET ON THE CHILEAN COAST

♦180. SHRI A. D. MANI: Will the Minister of EXTERNAL AFFAIRS be pleased to state:

(a) whether it is a fact that a news-item was published in the Bolivian press in May last to the effect that India has supported that country's demand for an outlet on the Chilean coast; and

(b) if the news was not correct, how such a report was published in Bolivia?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRI DINESH SINGH); (a) Yes Sir. This news-item was incorrectly based on a letter written on behalf of the Government of India to the Permanent Representative of Bolivia by the Commonwealth Secretary, who was a member of the Indian Delegation to the United Nations during the Security Council debate on Kashmir, in May last.

(b) In this letter no reference was made lo the Bolivia-Chile dispute. It was only stated that the Gov ernment of India viewed the problem of Landlocked countries with sympathy. The Bolivian news-papers wrongly interpreted this as India's support to Bolivia's demand for outlet through the Chilean Coast The position has been clarified by the Ministry of External Affairs in New Delhi and in the Capitals of Bolivia and Chile, Lapaz and Santiago.

SHRI A. D. MANI: Did Mr. Jha, who addressed the letter concerned, make a reference of the matter to the Government of India, or did he answer the letter on his own initiative?

SHRI DINESH SINGH: Sir, as I mentioned, there was nothing in the letter that referred to the dispute. It only referred to the sympathy of the Government of India, which was the same in the case of all the countries which are landlocked and so it was not necessary to make a specific reference, because he was aware of our policy.

SHRI A. D. MANI: Is it the Government's policy to encourage the territorial claims of one country, which is landlocked against another country which stands in the way of its access to the sea?

SHRI DINESH SINGH: As I mentioned just now, we have not referred to the dispute or claims. It is the same sympathy we have for any landlocked country which wants some kind of facility for getting goods into that country.